B.A. Part II Sociology (Hons)

14/08/2020 Paper - Indian Society

Topic - Schedule caste : Issues and ~~Prob~~ Problems Part I

By - Himanshu Shekhar

अनुसूचित जातियाँ :—

अनुसूचित जातियाँ जो 'अस्पृश्यों' की बहुसंख्या है, तकनीकी रूप से चार वर्ण योजना से बाहर है। इन जातियों को सामाजिक व सांस्कारिक अशुद्धि से परिपूर्ण माना जाता था तथा उनके धन्धे नियामक श्रेणीक्रम में निम्नतम माने जाते थे।

इससे शहरों और गाँवों में उनके पृथक आवास की परंपरा को बल मिला।

1935 में 'अनुसूचित' बनने से पूर्व इन जातियों को 'बाह्य' (exterior), पतित जातियां, भग्न व्यक्ति (broken man) और विजातीय (outcastes) कहा जाता था। गाँधी जी ने इन्हें 'हरिजन' की संज्ञा दी है।

1931 की जनगणना में इन जातियों की पहचान के लिए कुछ सामाजिक आधार प्रयोग किया गया। इसी आधार प्रमाप पर 1935 में इन जातियों को अनुसूचित जाति के रूप में सूची बनाई गई। इनमें से कुछ आधार प्रमाप थे- क्या ब्राह्मण इनके लिए पुरोहित का काम करते हैं, क्या नाई, दर्जी आदि की सेवाएँ उन्हें उपलब्ध होती हैं, क्या वे जातीय हिंदुओं को पानी पिला सकते हैं, क्या वे हिंदू मंदिरों में प्रवेश कर सकते हैं, क्या वे सार्वजनिक ~~सुविधाएं~~ सुविधाओं जैसे सड़कों, कुंओं स्कूलों आदि का प्रयोग कर सकते हैं, क्या उनके स्पर्श या निकटता से उच्च जातियां अशुद्ध होती हैं, क्या सामान्य व्यवहार में उच्च जाति के लोगों द्वारा उन्हें समान समझा जाता है, क्या वे घृणित पेशे में संलग्न हैं आदि।

1935 में 227 अनुसूचित जातियों की सूची बनाई गई।